माता बनाम आया

"मातृ तत्व" और "आया तत्व" के अंतर को

"मातृभाषा" और "आया भाषा" के अंतर को,

"मातृप्रेम" और "आया प्रेम" के अंतर को,

"मातृज्ञान" और "आया ज्ञान" के अंतर को,

शायद समाज मेरा,

समझकर भी नासमझ है |

वेतनभोगी आया से पीढ़ी निर्माण?

वेतनभोगी आया से संस्कार निर्माण?

वेतनभोगी आया से व्यक्ति निर्माण?

वेतनभोगी आया से भविष्य निर्माण?

शायद समाज मेरा,

जानकर भी अनभिज्ञ है |

माया के आने से माता का जाना हुआ,

माया के आने से आया का आना हुआ,

माया और आया के अभेद चक्रव्हयू में,

अबोध संतति का देखो कैसा ह्रास हुआ |